घने अंधकार में रोशनी

आलेख: अंजुम नईम
फोटो: राजेश कुमार सिंह

अमेरिकी दूतावास की मदद हासिल करने वाली कानपुर की एक गैरसरकारी संस्था ने यातनाओं की शिकार महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण जगाई है।

जाहिदा को उसके पिता ने ही पैसों के लिए तीन बार शादी के लिए मजबूर किया। सखी केंद्र में अपना जीवन संवारने में जुटी महिलाओं में वह भी शामिल है।

औद्योगिक शहर कानपुर के बाहरी इलाके में बसा परमपुरा। रिक्शे-ठेलों की रेलमपेल और कोलाहल के बीच हम छोटे से मोहल्ले में पहुंचते हैं। नाम है- जुही मोहल्ला। कुछ कच्चे, कुछ पक्के मकान और एक पुराना-सा मंदिर। मंदिर से सटा एक प्लॉट है, जिस पर 3-4 फुट ऊंची कच्ची दीवार बनी है। दस छोटी-छोटी झोपड़ियां हैं। साथ में सामान ढोने के लिए कुछ जानवर बंधे हैं। कुछ गधे और कुछ घोड़े। दाहिनी तरफ बिना दरवाजे का एक टूटा-फूटा मकान है। यहीं 18 साल की तराना रहती है- अपने परिवार के साथ। पांच बहनें हैं और एक भाई। पिताजी रिक्शा चलाते हैं और मां दूसरों के घरों में मजदूरी।

हमारे वहां पहुंचते ही ढेर सारे लोग इकट्ठे हो जाते हैं। उसी भीड़ में सफेद कपड़ों में लिपटी एक लड़की सामने आती है। लंबी-छरहरी और गोल चेहरा।

उसकी आंखों ने मुझे बरबस अपनी ओर खींच लिया। उनमें किसी तरह का कोई भाव नहीं था। अन्य बच्चों की तरह न तो किसी तरह की घबराहट थी और न ही अजनबी आगंतुकों के प्रति कोई उत्सुकता। वह अपनी उम्र से कहीं बड़ी लग रही थी। जैसे कि जिंदगी का बहुत कुछ देख चुकी हो और बार-बार अपनी आपबीती सुनाते-सुनाते थक चुकी हो।

उसकी बहन तबस्सुम भी वहीं खड़ी थी। तबस्सुम ने धीरे से तराना की देह पर लिपटा सफेद दुपट्टा खींचा तो जो कुछ मेरे सामने था, उसे देखकर मैं सन्न रह गया। हमारे सामने जैसे एक युवती का विकृत नग्न चित्र था। उसकी दोनों बांहें कंधों से काट दी गई थीं। उसके उरोजों की जगह दो काले धब्बे थे। कमर के नीचे का हिस्सा भी मांस के लोथड़ों की तरह था। उसके पंजे भी विकृत हो चुके थे। अलबत्ता, चेहरे को जानबूझ कर उसके हाल पर छोड़ दिया गया था। उस पर कोई निशान नहीं थे। हमारे कहने पर तबस्सुम ने दुपट्टे को उसके निस्तेज शरीर पर फिर लपेट दिया। ''तेजाब की कुछ बूंदें इसके दिल में भी घुस गई होतीं तो अच्छा होता। कम से कम इस तरह घुट-घुट कर जीने से तो बेहतर होता। यह भी कोई जीना है।'' आंसू ढुलकाते हुए तबस्सुम बोली। इस मंजर को देखकर मैं बुरी तरह से हिल गया था। बहुत मामूली सा सवाल ही मैं उससे पूछ पाया, ''यह सब आखिर हुआ कैसे?''

निराश और आक्रोश से भरी तराना बोली, ''वह तो मेरा भाग्य था कि मैं बच गई, वरना उन जालिमों ने तो मुझे तेजाब से मार ही डाला था।'' बोलते-बोलते उसकी आंखें डबडबा आईं तो सखी केंद्र की सामाजिक कार्यकर्त्ता सुभाषिनी चतुर्वेदी ने हमें उसकी पूरी कहानी बतानी शुरू की। सखी केंद्र एक जनहितकारी संगठन है जो अत्याचार की शिकार महिलाओं और लड़कियों के लिए काम करता है। लड़कियों के पड़ोसियों ने भी उसके साथ बीती घटना की पुष्टि की। कुछ अर्सा पहले तराना की मां के घर में कुछ पड़ोसी जबरन घुस आए थे। तराना की मां शकीरा ने मकान मालिक से इसकी शिकायत की। मकान मालिक ने उन लोगों को मकान छोड़ने की हिदायत दे डाली। इस बात को हफ्ता भर भी नहीं गुजरा होगा कि कुछ लोगों ने अचानक तराना को अगवा कर लिया। ये लोग उसे एक जीप में घसीट कर किसी अज्ञात जगह की ओर ले गए। अगवा करने वालों में शकीरा की एक पड़ोसन नाजो और उसके तीन रिश्तेदार थे। नाजो ने उसे खाने को कोई चीज दी जिसे खाते ही वह बेहोश हो गई। जब तराना की आंखें खुलीं, उसकी सलवार खून से लथपथ थी। उसे बिजली के झटके दिए जा रहे थे। वह एक बार फिर अचेत होकर गिर पड़ी। इस भुतहे कमरे में बर्बरता की सारी हदें टूट चुकी थीं।

चार दिन बाद जब शकीरा अपने घर में आंगन में खड़ी थी, तभी एक कार आकर रुकी। तराना को घर के बाहर छोड़कर वे चले गए। उसके शरीर में बमुश्किल सांसें चल रही थीं। उसकी जिंदगी बचाने के लिए डॉक्टरों को कंधे से उसके दोनों हाथ काट देने पड़े। तराना बच तो गई पर उसके भीतर की तराना मारी जा चुकी थी। बची थी तो सिर्फ एक क्षत-विक्षत देह और कुछ सांसें।

हम वहां वापस निकले ही थे कि कुछ कदमों पर मंदिर के पुजारी देवी प्रसाद तिवारी बोले, ''जालिमों ने कैसा तांडव रच डाला।'' जेठ का सूरज कुछ और तपने लगा था। मैंने अपने ड्राइवर से कहा- सखी केंद्र के शेल्टर होम ले चलो।

पुरुष रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने तराना पर तेजाब डाला, बिजली के झटके दिए और चाकुओं से गोदा। चार दिन तक चली इस बर्बरता में सिर्फ उसके चेहरे को छोड़ा गया। सखी केंद्र ने उसके इलाज के लिए धन दिया जिससे उसकी जिंदगी बच गई। लेकिन वह अब भी उसी इलाके में रह रही है।

दाएं: गुड़िया ने जिन लोगों पर विश्वास किया, उन्होंने ही उसे लगातार धोखा दिया और उत्पीड़न किया। वह 16 वर्ष की उम्र में ही मां बन गई। अब उसकी उम्र 20 साल से ज्यादा है और उसने सखी केंद्र की मदद से पढ़ाई शुरू की है।

सत्तर के दशक में कानपुर की स्वदेशी कॉटन मिल में हड़ताल के दौरान हुई फायरिंग में कई मजदूर पुलिस की गोली से मारे गए थे। तभी उनकी विधवाओं की मदद के लिए सखी केंद्र की स्थापना की गई थी। आज यह जिंदगी के कड़ुवे अनुभवों से गुजर चुकी सैकड़ों औरतों और लड़कियों का आशियाना है। पिछले साल सितंबर में अमेरिकी दूतावास ने उत्तर प्रदेश में महिला अधिकारों की मजबूती के लिए उसे दस लाख रुपये का अनुदान दिया। नतीजा यह हुआ कि सखी केंद्र ने कानपुर से बाहर लखनऊ और झांसी में भी अपनी शाखाएं खोल दीं। सखी केंद्र की अध्यक्ष नीलम चतुर्वेदी बताती हैं, ''यदि ईमानदारी और निश्चय के साथ कोई काम किया जाए तो पैसे की कमी आड़े नहीं आती। आपका काम बोलता है। लोग खुद आगे बढ़ कर मदद के लिए आते हैं।''

चतुर्वेदी ने बताया कि तराना के इलाज में तीन महीने लग गए। लाखों रुपये का खर्चा आया। लेकिन इलाज के लिए धन कमी कभी महसूस नहीं हुई। जिन लोगों ने उसकी यह हालत बनाई थी, वे भी गिरफ्तार हुए और आज जेल में हैं। मुश्किलें झेल चुकीं औरतें सखी केंद्र में अपनी नई बहनों को ढाढस बंधाने का काम करती हैं। चतुर्वेदी बताती हैं, ''जो खुद कष्ट झेल चुकी हैं, उनसे बेहतर

यह काम कौन कर सकता है? यहां रह रही लड़कियां अपनी जिंदगी का एक-एक मिनट अपने जीवन को बेहतर बनाने की कोशिशों में लगी रहती हैं।''

मैं उनके साथ बातचीत में मशगूल था कि तभी मेरी नजर पास ही बैठी काउंसिलर अर्चना पर पड़ी। उसकी आंखों में भी आंसू थे। चेहरे पर गुस्सा और दुख। कुछ ही मिनटों में वह फूट पड़ी। ''औरतें मर्दों को जन्म देती हैं, लेकिन मर्द उन्हें कोसने में कोई भी कसर नहीं छोड़ते। वे औरतों को माल की तरह समझते हैं। बलात्कार, छेड़छाड़ और तेजाब छिड़कने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। आपको तराना की हालत देखकर हैरानी हुई, लेकिन पिछले एक साल में अकेले कानपुर में ही लड़कियों पर तेजाब फेंकने की एक दर्जन से ज्यादा घटनाएं घटी हैं।''

सखी केंद्र के शेल्टर होम में रहने वाली गुड़िया, मृदुला, सपना हो या सोनी, सबके पास बर्बरता की अपनी कहानी है। हरेक की व्यथा एक से बढ़कर एक दिल दहला देने वाली है। शेल्टर होम की दूसरी मंजिल पर एक बड़ा-सा हॉल है, जहां लड़कियां पढ़ना-लिखना सीखती हैं और दिन में नुक्कड़ नाटक का अभ्यास करती हैं। रात के वक्त यह हॉल एक डॉरमिटरी में तबदील हो जाता है। एक बिस्तर में 20-22 साल की एक लड़की किताब पढ़ रही है। उसके बाल कुछ उड़े-उड़े से हैं। उसके चेहरे ने मुझे अपनी तरफ खींच लिया। उसकी आंखों से हालांकि तराना से भी भयावह कहानी की झलक मिल रही थी, लेकिन उसका चेहरा एकदम सपाट था। चतुर्वेदी बताती हैं, ''यह गुड़िया है, बहुत अच्छी लड़की। इस साल इसने इंटर पास किया है।'' लेकिन वह अपनी ही दुनिया में खोई हुई थी।

आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गुड़िया ने मां के कहने पर पढ़ाई छोड़ दी और घर के कामकाज में हाथ बंटाने लगी। इसी बीच उसकी एक चाची और एक दूर के रिश्तेदार उनके पड़ोस में आकर रहने लगे। एक दिन चाची ने गुड़िया से बाजार साथ चलने को कहा। गुड़िया को याद है कि उसकी चाची और उस रिश्तेदार ने उसे खाने की कोई चीज दी। इसके अलावा जो दूसरी बात उसे याद है, वह यह कि वह कानपुर से मीलों दूर किसी और जगह पहुंच कर उसने आंखें खोलीं। ''मुझे नहीं पता कि मैं वहां कैसे पहुंची। मैं रोने लगी तो मुझे बताया गया कि वे मेरी शादी चाची के लड़के से कर देंगे और मुझे जिंदगी भर उसी के साथ रहना होगा। मुझे नहीं मालूम कि उससे मेरी शादी की गई कि नहीं, पर इतना मालूम है कि मुझे हर शाम किसी नए अजनबी के साथ सोने के लिए तैयार किया जाता,'' गुड़िया ने बताया।

गुड़िया 16 साल की भी नहीं रही होगी कि इसी बीच उसका एक बच्चा हुआ, जो कुछ ही दिन जीवित रह पाया। गुड़िया बताती है, ''मुझे नहीं मालूम कि उसे उन्होंने मार दिया या वह खुद ही मर गया।'' बच्चे की मौत के बाद गुड़िया ने वहां से खिसकने की भरसक कोशिश की। किसी तरह उसे उसके पिताजी के एक दोस्त ने अपने यहां शरण दी। जब गुड़िया के पिता को यह जानकारी मिली कि उसकी लड़की दोस्त के यहां रह रही है, तब भी वह उसे अपने घर वापस नहीं ले गए। घर से लंबे समय तक गायब रहना और इस तरह अचानक लौट आने से उन्हें समाज में बदनामी का डर सताने लगा था। लेकिन दुर्भाग्य ने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा। पिता के दोस्त ने ही उसकी मजबूरी का फायदा उठाना चाहा। उसे अब मानवीय रिश्तों पर कोई भरोसा नहीं रह गया था। इसलिए उसने खुदकुशी की कोशिश की। गुड़िया को पता नहीं कि उसके बाद क्या हुआ, वह कैसे सखी केंद्र पहुंची। हालांकि चतुर्वेदी कहती हैं कि उसकी मां उसे यहां ले आई थी।

जाहिदा नाम की एक और लड़की ने हमें बताया कि किस तरह उसके बाप ने सिर्फ धन के लालच में उसकी तीन बार शादी करवा दी थी। मुझे लग रहा था कि जैसे मैं एक बड़े से स्क्रीन पर कोई वृत्तचित्र देख रहा हूं, जिस पर एक के बाद एक आ रहे दृश्यों की कहानियां और दर्दनाक होतीं। यदि कोई लड़की घरेलू हिंसा की शिकार थी तो कोई बलात्कार के बाद मरने के लिए सड़क पर छोड़ दी गई थी। ऐसी भी औरतें थीं, जिन्हें मवेशियों की तरह कई बार खरीदा और बेचा गया था।

राष्ट्रीय अपराध नियंत्रण ब्यूरो के मुताबिक हर साल देश में महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराध के 15,000 मामले दर्ज होते हैं। लेकिन सचाई यह है

कि बलात्कार और यौन शोषण के 60-70 प्रतिशत मामले तो रिपोर्ट ही नहीं होते। इसलिए ये आंकड़े बहुत कम हैं। जाहिदा मेरे लिए चाय की प्याली ले आई। साथ ही स्थानीय अखबार को खोल कर मेरे सामने रख दिया। तीसरा पेज था। अपने बच्चों के साथ कोई दो दर्जन औरतों की तस्वीरें थीं। यह इलाहाबाद में एक होटल में पड़े पुलिस छापे की रिपोर्ट थी जिसमें दो दर्जन औरतें वेश्यावृत्ति करती पकड़ी गई थीं। उनमें से बहुत-सी मध्यप्रदेश की थीं। उन्हें नौकरी का प्रलोभन देकर उत्तर प्रदेश लाया गया था। लेकिन नौकरी की बजाय उन्हें वेश्यामंडी में धकेलने की एक चाल थी यह। जाहिदा के चेहरे पर उतर रहे भावों को मैं साफ पढ़ सकता था।

समस्या सिर्फ भारत की ही नहीं है। अमेरिकी श्रम विभाग के मुताबिक हर साल 50,000 औरतें और बच्चे कबूतरबाजी के जरिये अमेरिका लाए जाते हैं। ''उनमें से कुछ को दुकानों में मजदूरी करने के लिए लाया जाता है तो कुछ को घरेलू नौकरों के रूप में और कुछ को खेतों में मजदूरी के लिए। लेकिन सबसे ज्यादा लोग सेक्स उद्योग में काम करने के लिए लाए जाते हैं।'' यह बात अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फोर्ड ने कोलकाता में वर्ष 2004 में कारपोरेट -एनजीओ पार्टनरशिप टू कॉम्बैट ट्रैफिकिंग पर आयोजित सम्मेलन में दी। अपने कामकाज के दौरान इन औरतों को एक न एक बार बलात्कार, मारपीट और अपमान का सामना करना ही पड़ा है। और एचआईवी-एड्स जैसी जानलेवा बीमारियों के संपर्क में आती रही हैं। अमेरिका ने पिछले कुछ वर्षों में 4,000 लाख डॉलर दुनिया भर में कबूतरबाजी को रोकने में खर्च किए हैं। पिछले वर्ष ही अमेरिका ने 101 देशों में चल रही परियोजनाओं पर 950 लाख डॉलर खर्च किए। अकेले अमेरिका में कबूतरबाजी को रोकने के कार्यक्रमों में 250 लाख डॉलर खर्च किए गए।

सखी केंद्र की सामाजिक कार्यकर्ता सुभाषिनी चतुर्वेदी (दाएं-नीली पोशाक में) कानपुर के गडरिया पूर्वा इलाके में एक महिला को परामर्श देते हुए। यह केंद्र लड़कियों और महिलाओं के लिए आश्रय स्थल है और लखनऊ और झांसी में इसकी शाखाएं हैं।

नीचे: सोनी जिसकी भी यातनाओं की लंबी कहानी है।

पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका ने भारत में चल रही 24 परियोजनाओं को 90 लाख रुपये का अनुदान दिया है। भारत सरकार के महिला और बाल विकास विभाग के तहत 1998 में एक कार्यक्रम शुरू किया गया-महिलाओं और बच्चों की कबूतरबाजी और व्यापारिक व यौन शोषण को रोकने के लिए कार्य योजना। इस योजना को एनजीओ के साथ मिलकर अंजाम दिया जा रहा है।

बहरहाल सखी केंद्र की चतुर्वेदी कहती हैं कि जब तक आम आदमी अपनी आवाज को बुलंद नहीं करता, ऐसे प्रयास सफल नहीं हो सकते। चतुर्वेदी 1999 में अमेरिकी विदेश विभाग के अंतरराष्ट्रीय विजिटर लीडरशिप प्रोग्राम के तहत अमेरिका गईं जहां उन्होंने महिला कल्याण के लिए काम कर रहे संगठनों के साथ विचार-विमर्श किया और शेल्टर होम का दौरा किया।

वह बताती हैं, ''उन्होंने ऐसे कई लोग देखे जो अपने व्यस्त जीवन में से कुछ वक्त निकालकर कल्याणकारी कार्यों में योगदान करते हैं। किसी भी कल्याणकारी संस्था के अस्थायी कर्मचारी भी उतनी ही लगन और ईमानदारी के साथ काम करते हैं, जितने कि स्थायी कर्मचारी।'' वह कहती हैं, जब तक हममें से हरेक की भागीदारी नहीं होती, तब तक कोई भी सरकारी या गैर सरकारी प्रयास सफल नहीं हो सकता। जैसे ही मैं दिल्ली लौटने को हुआ, 14 साल की दुबली सी लड़की सपना की छवि बार-बार मेरे मन-मस्तिष्क में तैरने लगी। जब मैं उससे मिला, तब वह एक बच्चे को बांहों में लिए डुला रही थी। मैंने पूछा, क्या यह तुम्हारा भाई है? वह बोली, चाहे आप भाई समझें या बेटा। यदि यह बच गया तो मुझे इसकी मां बनना पड़ेगा। वह भले ही अपने शब्दों में सहज लग रही थी, लेकिन क्या उसके पीछे छिपी भयावह सचाई को हम छुपा सकते हैं? उसके गाल पर आंसू ढुलक रहे थे और मैं बाहर मेरा इंतजार कर रही कार के लिए अपना सामान समेट रहा था। □